वर्तमान परिपेक्ष्य में कृषि का औद्योगिक स्वरूप : एक अनुशीलन

पंकज कुमार

विज्ञान ने मनुष्य को इस चुनौती का हल खोजने की शक्ति एवं सामर्थ्य दे दी है। विज्ञान के जरिए भारतीय कृषि के परम्परागत और भाग्यवादी स्वरूप के स्थान पर नया व्यवसायिक और औद्योगिक स्वरूप विकसित करने में काफी अद तक सफलता मिली है। कृषि प्रधान भारत ने दुनिया के प्रथम दस औद्योगिक देशों में स्थान बना लिया है।

फसलों को रोगरोधी और कीटरोधी बनाने तथा आनुवंशिक रोगों से छुटकारा दिलाने में नित नूतन सफलताएँ हासिल की गयी है। विज्ञान की जैव प्रौद्योगिकी शाखा से फसलों की किस्मों व उनकी उत्पादनक्षमता में उत्साहवर्धक सुधार हुए हैं। कृषि यंत्रीकरण की बदौलत ही आज लगभग 400 हेक्टेयर भू–भाग में बहुफसलीकरण कार्यक्रम सफलता–पूर्वक संचालित किए जा रहे हैं जबकि 1965–66 के पूर्व इनक कार्यक्रमों की प्रगति नगण्य थी। हरित क्रांति के सफल प्रयासों से जहाँ एक दौर भारतीय कृषकों द्वारा अधिक उपज देने वाली फसलों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशी दवाइयों, आधुनिक उपकरणों एवं सिंचाई के नवीनतम साधनों को उपलब्ध कराया गया वहीं दूसरी ओर कृषिगत माल के भण्डारण, प्रसंस्करण एवं नियमन कार्यक्रमों का विस्तार करने के कार्यक्रम चल रहे हैं। इसके लिये वित्तीय संस्थानों की स्थापना औद्योगिक क्षेत्र की ही तरह जोड़ पकड़ने लगी है।